

दादी सभी का उमंग-उत्साह बढ़ाती

विराजमान रह, निश्चिंत भाव से परोपकार में तत्पर रहतीं और अन्य आत्माओं को सेवा में साथी बनाकर, एकता के सूत्र में बांधकर, व्यस्त भी रखतीं और आगे भी बढ़ाती।

दादी जी के अंदर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी

दादी जी के कमरे में दोनों तरफ बाबा के चित्र लगे हुए थे। उनका सारा ध्यान बाबा में ही रहा। बाबा के सिवाय कहीं भी, न किसी चीज में, न व्यक्ति में, न वैभव में लगाव-झुकाव था। उनके अंदर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी। दादी जी हमेशा कहती थीं, सिम्पल रह, सिम्पल बनो। दादी कभी भी न तड़क-भड़क स्वयं पसंद करती थीं, न हम लोगों को करने देती थीं। कभी ऐसा कुछ देखती थीं तो तुरंत कहती थी, जाओ, बदल कर आओ। मर्यादा पुरुषोत्तम बाबा की बच्ची होने के नाते दादी, स्वयं मर्यादा में रहती थीं और सबको यही सिखाती थीं। वे कहती थीं, न बहुत ऊपर, न बहुत नीचे, साधारण रहो।

कई बार हम कहते थे, दादी, इतने वर्ष हो गये हैं, आपका बाथरूम इतना पुराना हो गया है। दादी कहती थीं, जैसा है, वैसा ही ठीक है। दादी का हमेशा लक्ष्य रहा कि जैसा कर्म मैं करूंगी, मुझे देखकर

दूसरे भी करेंगे। इसलिए दादी ने आज तक ऐसा कोई कर्म नहीं किया जो दूसरों के लिए ठीक न हो। दादी ने वो कर्तव्य किए जिनका सब सहज अनुकरण कर सकें। दादी जैसी परम पवित्र आत्मा, दुनिया में आज तक कोई दिखाई नहीं दी। दादी के संकल्प तक में नकारात्मक भाव नहीं था। पर ऐसा भी नहीं था कि किसी की गलती देखकर दादी बताती नहीं थीं, इशारा देती थीं कि इस पर ध्यान दो। पर ध्यान खिंचवाकर चली जाती और भूल जाती थीं। लौटकर आने पर बहुत प्यार से कहती थीं, चलो यह करें, वह करें, अंगुली



पकड़कर उसे घर, रसोई घुमाने लगती थीं। अंदर से आता था कि अभी तो दादी इशारा देकर गई, अभी ऐसे प्यार कर रही हैं। फिर हम दादी को पूछते थे तो कहती थीं, ऐसा? मुझे तो याद ही नहीं है। पहले-पहले मैं सोचती थी, दादी तो कह देती हैं कि मुझे याद नहीं पर मेरे अंदर तो यादें चलती थीं। तो दो-तीन बार के अनुभव के बाद मैंने समझा कि दादी के दिल में कुछ रहता ही नहीं था। संकल्प-मात्र भी किसी के लिए कोई ऐसी भावना न हो, यह बहुत ऊंची बात है, बहुत कमाल की बात है।

दादीजी की मधुर मुस्कान व प्यार कभी भूलता नहीं

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण कोई भी योग्यता पैदा करने में मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगती। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नजरें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। उनके स्पर्श मात्र से दिव्य शक्ति का मुझमें संचार होता था। ओम् शांति भवन, ज्ञानसरोवर, शांतिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबंधन दादी जी ने मुझे सिखाया। दादीजी खरीदारी की चीजें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी।

दादी जी बहुत ही रहमदिल और ममता की मूरत थीं

दादी जी कभी कोई बात चित्त पर नहीं रखती थीं। मैं छोटी थी, तब कोई गलती कर देती थी तो बहुत प्रेम से समझाती थीं। क्षमा की सागर थीं, हर गलती को भूलाकर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादी जी स्वयं सदा संतुष्ट रहती थीं और उनके बोल थे, 'सभी यज्ञ-

वत्स सदा खुश और संतुष्ट रहने चाहिए।' किसी को कुछ भी चाहिए तो बाबा के भण्डारे से उसे अवश्य मिलना चाहिए, यह उनकी भावना होती थी। दादी जी को सारे ब्राह्मण परिवार से बेहद प्यार था। जो सामने आता था, उसका मुस्कराकर स्वागत करती थीं। कहती थीं, आओ, आओ। वे निद्राजीत और अथक सेवाधारी थीं। जब कभी हम कहते थे, दादी, अमुक व्यक्ति आपसे मिलने आया है तो बिस्तर से उठकर भी मिलने को तैयार रहती थीं। वे तपस्वीमूर्त थीं। रात्रि को दो बजे उठकर तपस्या करती थीं। अमृतवेले का योग नियमित करती थीं। उस समय उन्हें बाबा से बहुत प्रेरणाएं मिलती थीं जिन्हें वे सुनाती भी थीं।

दादीजी त्याग और सादगी की मूरत थीं

यज्ञ में हजारों ब्राह्मण भाई-बहनें तथा अनेक वी.आई.पीज आते थे। वे हरेक से मिलती थीं। चाहे 30 हजार भाई-बहनें भी आ जाते थे, फिर भी लाइन से सभी उनकी दृष्टि का अतीन्द्रिय आनन्द प्राप्त करते थे। हर कार्य करने में उनका उमंग-उत्साह सदा बना रहता था। वे त्याग और सादगी की भी मूरत थीं। प्यारे बाबा के स्लोगन - जो खिलाओ, जो पहनाओ, जहां बिठाओ, इसकी पूर्ण धारणा उनके जीवन में देखीं। वे मास्टर पालनहार थीं। एक हजार यज्ञ-वत्सों और दस हजार निमित्त शिक्षिकाओं सहित सभी को बाप समान पालना देती थीं। मुरली से उनका जिगरी प्यार था। दिन में तीन बार स्वयं मुरली पढ़ती थी ही, क्लास में सुनाती थीं वो अलग। जब तक स्वस्थ रहीं, हमेशा स्वयं ही क्लास में मुरली सुनाती थीं।

इंफॉर्मेशन थॉट प्रोसेस पर गहरा प्रभाव डालती है

प्रश्न:- कई बार लोग कहते हैं कि समाज में जो हो रहा है यह उसी का आईना है!

उत्तर:- समझो अगर कहीं थोड़ा-थोड़ा कुछ हो भी रहा है लेकिन अगर इतने सब लोग अगर उसको रोज देखते जायेंगे उसके थॉट्स का प्रभाव कहीं न कहीं वो मेरे घर में पड़ना शुरू हो जायेगा क्योंकि वो मेरे मन में होना शुरू हो गया। टी.वी. का प्रभाव घर पर नहीं है, टी.वी. का प्रभाव हरेक के मन पर है फिर हरेक की सोच भी वैसी ही बनने लगती है। अगर मैं रोज एक सीरियल देखूं जिसमें मुझे ये दिखाया जायें कि किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए, आज तो घर के अपने ही परिवार वाले घर वालों को धोखा दे रहे हैं। मैं रोज... रोज... रोज... ये देखूं तो हमारे मन पर उसका प्रभाव पड़ेगा ही।

प्रश्न:- अगर न्युज भी हम देखते हैं तो उसमें भी हर रोज चाहे वो पात्र बदल जाए, चाहे वो लोग बदल जाएं लेकिन वो न्युज हिंसा वाली बहुत प्रभावित करती है!

उत्तर:- हिंसा वाली न्युज, भय वाली न्युज से वैसे ही थॉट मेरे मन में क्रियेट होंगे। अब हम वापस अपने प्रोग्राम पर आते हैं, लोग क्यों 'अवेकनिंग विद् ब्रह्माकुमारीज़' देखते हैं? क्योंकि हम यहां पर हरेक के मन की बात करते हैं। जो एक बिलीफ सिस्टम के साथ चल रहे थे कि गुस्सा करना नेचुरल है, टेंशन होना नेचुरल है, फिर यह सुन-सुन कर क्या हुआ? हमारे थॉट पर उसका प्रभाव पड़ा। बहुत सारे लोग क्या कहते हैं, गुस्से के बिना भी काम हो सकता था लेकिन हम रोज गुस्से वाली सीरियल देखते हैं जिसमें यह दिखाया जाता है कि गुस्से से किस तरह से काम हो जाता है, तो उसका हमारे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न:- पिक्चरें, यू नो लाइक जो अभी तक अंडर डॉग का वो होता



है कि उसका हिंसा, उसका दुःख, उसको उजागर और चित्रित किया जाता है।

उत्तर:- यह एक प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आप जो सूचना ले रहे हैं वो आपके थॉट प्रोसेस पर कितना गहरा प्रभाव डालता है।

प्रश्न:- हमारे पास कुछ ऐसे बिलीफ सिस्टम हैं जो बहुत गहरा प्रभाव डालते हैं, ये जो पैसा है वह आपको गलत रास्ते पर लेकर जाता है। क्या यह बिलीफ सिस्टम सही है, यदि नहीं तो क्यों?

उत्तर:- ये सत्य नहीं है। कहीं न कहीं हमारा बिलीफ सिस्टम बहुत प्रभावित होता है। भले आज हम टी.वी. देख रहे हैं, मूवी देख रहे हैं और हम सिर्फ अकेले तो नहीं देख रहे हैं, हमारे साथ हमारे बच्चे भी तो होते हैं। जितना वो छोटे हैं उतना उनके मन पर ज्यादा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उनकी तो अभी मानसिक शक्ति का विकास ही हो रहा है कि थॉट को कैसे क्रियेट करें।

प्रश्न:- यहां पर एक बात स्पष्ट हो जाती है कि टी.वी. का प्रभाव बच्चों के ऊपर बहुत अच्छा नहीं पड़ता है। हम कहते भी हैं कि टी.वी. इतना मत देखें। क्यों माँ-बाप अपने बच्चों को टी.वी. देखने से मना करते हैं। क्या हमें इसका कारण पता था? नहीं था। लेकिन आज हमें अपने लिए भी तो कारण पता चला। आज अगर हम समझकर अपने ऊपर और बच्चों के ऊपर कम से कम थोड़ा सा भी ध्यान दें, लेकिन हम तो टी.वी. से निकल ही नहीं पाते हैं तो बच्चों के ऊपर क्या ध्यान देंगे!

उत्तर:- हम बच्चों को कहते हैं कि टी.वी. मत देखो क्योंकि हमें लगता है कि हम अपना अधिक समय उसी के सामने व्यतीत करें। इतना समय उन्हें पढ़ना चाहिए या उनकी आँखों की रोशनी खराब होती है। बहुत कम लोग जानते हैं कि उसका प्रभाव हमारे मन पर कितना गहरा पड़ता है।

प्रश्न:- कहते तो आते थे लेकिन कैसे पड़ता है ये तो मुझे भी पता नहीं था।
उत्तर:- अब सपोज मैंने एक घंटा- दो घंटा भी टी.वी. देखा तो उसका प्रभाव हमारे मन पर लम्बे समय तक रहता है। अब उसके बाद पढ़ने के लिए बैठो। माइंड तो नम अवस्था में है अभी, फिर उसको सक्रिय करना, वो एकाग्रता के लेवल पर लेकर आना, क्योंकि उसने फोकस करना ही बंद कर दिया था।



वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका व.कु.मुन्नी

एक बार दादी जी ने मुझसे कहा, जाओ, म्यूजियम सजाकर आओ। मैंने मन में सोचा, मैं तो स्वयं भी ठीक से कपड़े नहीं पहन पाती हूँ, तो म्यूजियम में रखे मॉडल्स को कैसे श्रृंगारूंगी। मैंने दिल की यह शंका दादी के समक्ष प्रकट की तो उन्होंने कहा, तुम जाओ, दादी कहती है, तुम सजा सकती हो। दादी का ऐसा विश्वास पाकर मेरी बुद्धि विचार चलाने लगी। एक दर्जी भाई का सहयोग लेकर मैंने म्यूजियम सजाने की सेवा पूरी की और दादी जी को दिखाई। दादी जी ने मुझे बहुत प्यार दिया। इस प्रकार दादी जी आज्ञा भी देती थीं और कार्य करने की शक्ति भी प्रदान करती थीं। जैसे छोटे बच्चे को कहा जाता है, उसी प्रकार दादी जी कहती थीं, मुन्नी, अभी यह काम करके आओ। वे बहुत ही प्यार से कहती थीं और उनकी इसी प्यार की शक्ति ने यज्ञ-सेवा का छोटे-से-छोटा और बड़े से बड़ा कार्य भी हमको करना सिखा दिया। उनके नयनों से प्यार बरसता था, जब वे प्यार से 'मुनड़ी' कहकर बुलाती थीं तो मेरा रोम-रोम खिल उठता था।